429 P
H 88
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1332/1071

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 429

स्वदेशी गायन-रत्न

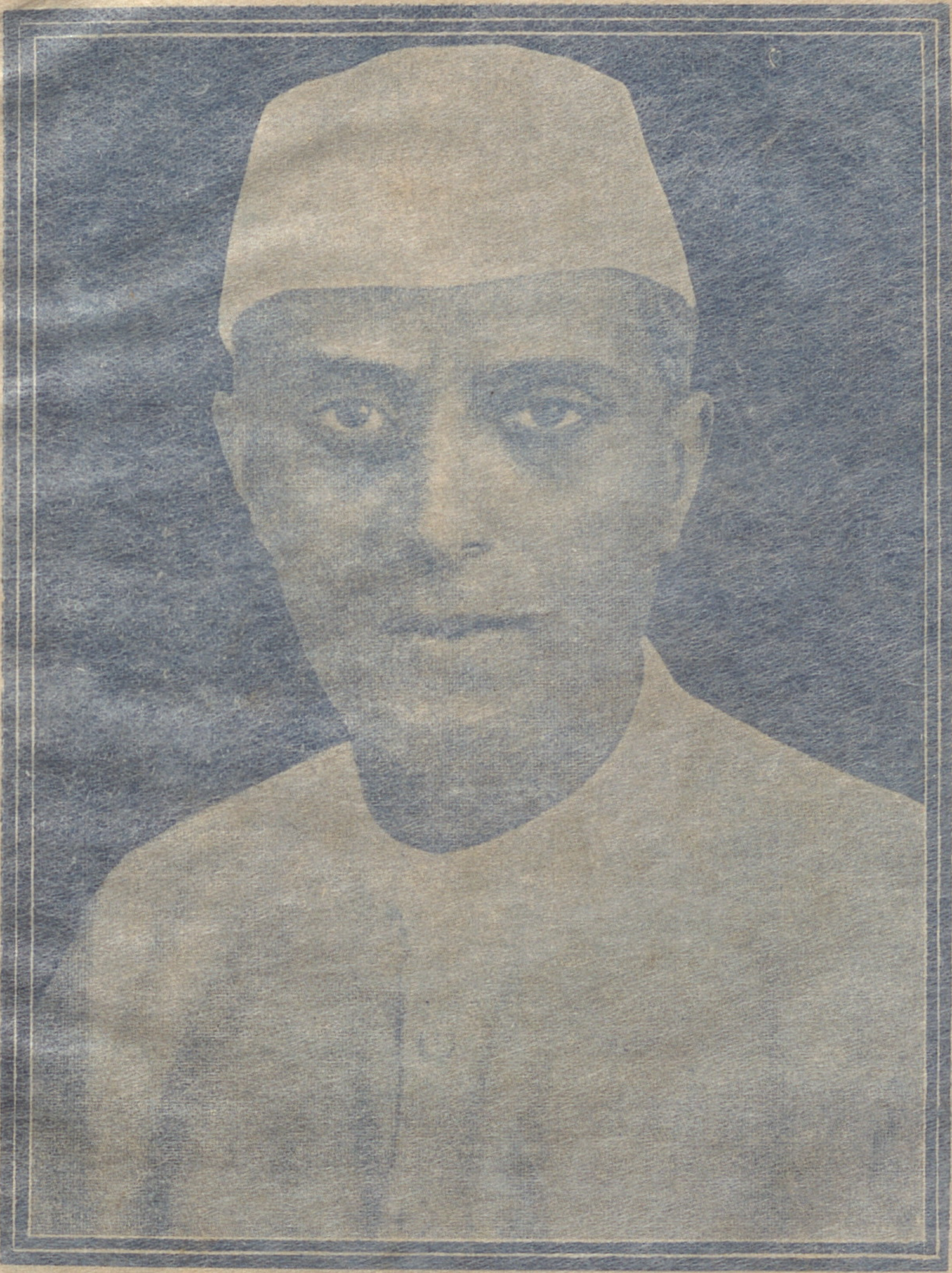

श्री मुंशीसिंह "रत्न" दलेलनगर-निवासी

पो० गोकुल बेहटा, जि० हरदोई

RECEIVED.
10 DEC. 1930

हिन्द के लुटेरे

पोल खुलते देखली तो जप्त करने को चले।
जप्त करलो लाख पर तुम हिन्द से जाओ चले॥

कट गये लाखों बहादुर देश के हित काम में।
कर रहे हो ऐश तुम आओगे फिर किस काम में॥

लेखक
पं० मसुरिया दीन तिवारी
कटरा, इलाहाबाद।

प्रथम बार] सर्वाधिकार सुरक्षित [मूल्य दो पैसा

891.43
I541H
1811

हिन्द के लुटेरे

माता की वीरता

मैदान जङ्ग आ गई माता सरूपा रानी।
कृष्णा सी पुत्री साथ में बधू कमला ऐसी रानी ॥
दहले हैं माता दुश्मन देखा जो रूप तेरी।
उमा नेहरू को देखो घर घर झंडा फहरानी ॥
खद्दर की साड़ी माता घर घर तुमने पहराई।
जेल में हित देश के कुल घर जाने को ठानी ॥
करती हो काम माता भारी से जो है भारी।
कहने में नारी सारी जाने को जेल में ठानी ॥
बान्दर सेना भी माता भारत में खूब घुमाया।
सेना पति भी हमने इन्दिरा नेहरू को मानी ॥
तुम जुग जुग जीओ माता दीनों के काम में आती।
हो जाओ जल्दी माता हम सब की महरानी ॥

पोल खुली

है हिन्द हमारा धनी देख लंडन से लुटेरे आये हैं।
लूटा जो धन को खूब मेरे उससे ये धनी कहाये हैं ॥
चोरी जब इनकी पकड़ गई तो म्यान से बाहर होने लगे।
अपने को राजा बन करके और हमको चोर बनाये हैं ॥ है हिन्द ॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 424
Date 9-12-...
GOVT. OF INDIA

किसी को डाँकू कह करके बेख़ता को फांसी लगा दिये ।
और किसी को बाग़ी कह करके उनको ये जेल भेजाये हैं ॥ है हिन्द

जब भाई हमारे खड़े हुए तब दुश्मन दिल में घबराये ।
डर गये निहत्थों से ये फिर गोली औ डंडे चलाये हैं ॥ है हिन्द ॥

थे घमंड में हम इतने अपने को एक समझते थे ।
अफ़सोस हिन्द में बीर बड़े गाँधी और जवाहिर आये हैं ॥ है हिन्द ॥

है हिन्द लूट का धन मेरा और ख़र्च इसी से चलता है ।
अब गया हिन्द इन हाथों से दिन बुरे हमारे आये हैं ॥ है हिन्द ॥

माता की पुकार

ऐ वीर बाँके मेरे सपूतो स्वतंत्र भारत को करना होगा ।
पिया है मां का जो दूध तुम ने यह पग न पीछे को धरना होगा ॥
पड़ी है दुष्टों के पाले माता यह अपनी आँखों से देखते हो ।
न दीनों के दुख में काम आये सुखी से तुमको न रहना होगा ॥
देकर के टुकड़ा यह रोटियों का ये कुत्ते तुम को लड़ा रहे हैं ।
अक़्ल से अपने विचार देखो यहाँ पे इनका न रहना होगा ॥
लूटा है धन को आकर तुम्हारा हर एक नस को भी चूस डाला ।
बनायेगें जो जेल ख़ाना यह हक़ पर अपने को भरना होगा ॥
बताया रास्ता है गाँधी जी ने गये जवाहिर भी जेल ख़ाना ।
ये गोली डंडों के आगे वीरो उठो और सीने को करना होगा ॥

ज़ुल्म का फल

ज़ुलुम जान मारेगी ख़ूनी तुम्हारी ।
बिगड़ जायगी राजधानी तुम्हारी ॥ज़ु० ॥

यह अपनी बन्दूकें हिफ़ाज़त से रखना।
बिगड़ जायगी गोलन्दाज़ी तुम्हारी ॥ ज़ु० ॥
जेलों को अपने हिफ़ाज़त से रखना।
सरासर भरेंगे जेल खाना तुम्हारी ॥ज़ु० ॥
यह अपने सिपाही हिफ़ाज़त से रखना।
बिगड़ जायगी फ़ौज सारी तुम्हारी ॥ ज़ु० ॥
यह हिन्द में आकर अकड़ के न बोलो।
बिगड़ शान जायेगी ज़ुलमी तुम्हारी ॥ज़ु० ॥
गाँधी व मोती कहे जल्द जाओ।
बिगड़ गई है प्रजा सारी तुम्हारी ॥ज़ु० ॥

वीरो

ऐ बीर तुम्हीं तुम होगे आगे को बढ़ा करना ॥ ऐ बीर ॥
जेलों को भरे रहना तोपो से नहीं डरना ॥ ऐ बीर ॥
दुश्मन को जला देना झंडे को लिये रहना ॥ ऐ बीर ॥
बन्द बिदेशी करना धरना शराब पर धरना ॥ ऐ बीर ॥
रद्दी क़नून को करना कारों को भी बन्द करना ॥ ऐ बीर ॥
इनकी न ग़ुलामी करना, भूखों ही चाहे मरना ॥ ऐ बीर ॥
ले कर स्वराज्य को रहना, चहे बल बेदी पर चढ़ना ॥ ऐ बीर ॥

स्वतंत्र मन्दिर

जेल शुभ अस्थान बीरो जहाँ महातमा जी गये।
कृष्ण भी पैदा हुये वहाँ और बसुदेव भी गये ॥
काम भारी कर गये और नाम दुनिया में हुआ।
हिन्द के सिरताज मोती और जवाहिर भी गये ॥

हैं डाक्टर महमूद किचलू और तैयब जी वहाँ।
सुभाष चन्दर सेन गुप्त भाई बल्लभ भी गये ॥
हैं तपस्या की जगह सब सिद्ध करके आयगे।
कहके सुन्दर लाल सबसे और टंडन जी गये ॥

मन में सोंच

कैसे होइ है हम सब के गुज़रवा हो।
अब तो मांगत हैं गाँधी स्वरजवा हो ॥ कैसे ॥
कैसे पलटन का चलि है खरचवा हो।
कहाँ पउबै हम इतना रकमवा हो ॥ कैसे ॥
सब राजों में इज़्ज़त हमारी गई हो।
अब तो कौनो न देइहैं सहरवा हो ॥ कैसे ॥
देखो कहने में आकर बुरा किया हो।
अकल काम न करती बन्दुकवा हो ॥ कैसे ॥
टुटा कार व बार सबी मिलें बन्द हो।
अब तो कौनो न लेइहै बीदेसिया हो ॥ कैसे ॥
आओ मोती जवाहिर सबी लीडर हो।
हम तो देंगे तुम सब को स्वरजवा हो ॥ कैसे ॥

क़ानून भंग

सर पटको तो इज़्ज़त तुम्हारा नहीं।
जब तक देंगे स्वराज हमारा नहीं ॥ सर ॥
नमक क़ानून यहाँ से तुम्हारा तोड़ा गया।
विदेशी कपड़े का आना यहाँ पर रोका गया ॥
अब तो कोई हुकूमत तुम्हारा नहीं ॥ सर ॥

तुम्हारे स्कूल वा दफ़तर पर हमारा झंडा ।
टोपी व कुर्तों के बिल्ले पर हमारा झंडा ॥
तुमने हमको डराना बिचारा नहीं ॥ सर ॥
नशे का कार तुम्हारा यहाँ से जाता है ।
तुम्हारा ऐश व आराम यहाँ से जाता है ॥
देना हमको लगान गवारा नहीं ॥ सर ॥
पुलिस हमारे भाई उनको मिलायेंगे ।
गोरे जो हैं तुम्हारे उनको भगायेंगे ॥
होगा गाँधी हुकूमत, तुम्हारा नहीं ॥ सर ॥

मार्डन स्कूल

मार्डन स्कूल पर बीरो उठो अब तो चढ़ाई है ।
दिखा कर घोष को नीचा यह अपनी बीरताई है ॥
है अन्याई महा यह घोष कराता .खून बच्चों का ।
बुला कर लड़कों से ईंटें औ छूरी .खूब चलाई है ॥
बुलाने से न तुम जाना डराने से न तुम डरना ।
अड़े रहो सत्य के ऊपर, तभी तुमरी बड़ाई है ॥
घेर लो स्कूल को जाकर न कोई पढ़ने वाँ जाये ।
बहा श्मशान कर देना जो तुमने हट लगाई है ॥
अगर वह माफ़ी भी माँगे न जल्द विश्वास तुम करना ।
यह कहना पद्म, केशव को जेल तुमने पठाई है ॥
अगर पीछे हटे बीरो तो तुम कायर कहाओगे ।
कहे मस्तुर हर एक शहरों में तुमरी फिर बुराई है ॥

कजरी पति पत्नि

सखी री पिया करें तकरार दुष्ट की करें .गुलामी ना ।
मना करें तो बिगड़ के बोले भूखों मरोगी ना ॥
कितने भूखे मरें देश में उनको ऐश की सूझी ना ।

खद्दर की सारी हमें मंगा दो लाये बिदेसिया ना ॥
संग की सखियाँ हमें लजायें वालन टिअरवा ना ।
खद्दर पहिन नहीं खाना बनाया बोले क्यों बनाई ना ॥
हाथ जोर कर मैं फिर बोली मेम बाला लाओ ना ।
मैं तो बन गई वालिंटियर अब करूँ पिकेटिङ्ग ना ॥
पिया हमारे फिर बहुत मनाया मैं फिर मानी ना ।
अंत समय पिया हार मान कर छोड़ी नौकरी ना ॥

पुलिस को चेतावनी

छोड़ो पुलिस नौकरी यार, अपना धर्म गवाने वाले ॥छोड़ो॥
पैदा हुए हिन्द में आय, बिक गये हाथ बिदेशी के जाय, ।
गारी उनकी सुनते हाय, डैम .फूल सुअर कहाने वाले ॥छोड़ो॥
दीना हुक्म तुम्हें वह यार, दिन भर यहां रहो तुम ठार,
बैठन नहिं पाओ तुम यार, धूप में देह तपाने वाले ॥छोड़ो॥
झूट वह तुम्हें बुलाते आय, युद्ध में आगे करते लाय,
अपना खड़े दूर पर जाय, .खून में तुम्हें रँगाने वाले ॥छोड़ो॥
दीना हुक्म कहीं तुम टार, आफ़त आ गई तुम पर यार,
दीना तुम्हें दलेल में डार, फरुआ .खूब चलाने वाले ॥छोड़ो॥
लेते रक़म वह दूना मार, तुमसे दूना कराते कार,
अपना बँगले में रहते यार, तुमको रूम रखाने वाले ॥छोड़ो॥
भाई बुरा न मानो यार, सच्ची कहता हूं ललकार,
मन में करो न .खूब बिचार, पूजा पाठ छुटाने वाले ॥छोड़ो॥

मालवीय जी की गिरफ्तारी

गिरफ़तार बम्बई में मदन मोहन हो गये ।
करनेको काम देश का कुछ ये वहां गये ॥
कर ख़तम काम अपना तिलक दिवस मनाया ।
लाखों की भीड़ साथ ले आगे को बढ़ गये ॥

ज़ालिम ने आके रोका न आगे को तुम बढ़ो।
क़ानून तोड़ने को हैं सब दर पे अड़ गये ॥
आ ग ये भाई बल्लभ डाक्टर व शेरवानी।
दुष्टों ने दौलत राम सबको जेल ले गये ॥
डरती है गवरमेन्ट औ करती है चलाकी।
मंजर अली को चुप्पे चुप्पे जेल ले गये ॥
ऐ बीर मती डरना .खूब काम करते जाना।
ताक़त भी इनके थोड़े से बस और रह गये ॥

ग़ज़ल

ऐ ज़ालिम तू मुझको सताये चला जा।
ये ख़ंज़र गले पर चलाये चला जा ॥
नहीं गोलियों से मैं मारूँगा तुझको।
फ़क़त मेरे हक़ को दिलाये चला जा ॥
तेरा वक्त़ आख़िर है तरसा न ज़ालिम।
कलेजे से मुझको लगाये चला जा ॥
.खुशी से तू दैदे करूँ सौ .खुशामद।
मगर क़ौल अपना निभाये चला जा ॥
मैं मरने से डरता नहीं इसमें कुछ शक।
खुशी हो तेरी आज़माये चला जा ॥
मस्सुर कहैं बिगड़ा भारत में बन्दर।
हँसी से .खुशी से यहां से चला जा ॥

प्रणाम

भारत की माता देवी तुझको प्रणाम है।
प्यारी स्वतन्त्रता भी तुझको प्रणाम है ॥
पैदा हुये हैं माता गांधी व जवाहिर।
सोते को जो जगाया उनको प्रणाम है ॥
छोड़ा है नशा पानी तजदी जिसने .गुलामी।
त्यागा विदेशी कपड़े जो उनको प्रणाम है ॥
घर बार छोड़ करके गये हैं जो जेल ख़ाना।
हित देश के जो मर गये सबको प्रणाम है ॥

मुद्रक—रामअधार यादव, यूनियन जाब प्रेस, कटरा प्रयाग।